कथा सरिता

कहीं पछताना ना पड़े!!!

एक अतिश्रेष्ठ व्यक्ति थे, एक दिन उनके पास एक निर्धन आदमी आया और बोला कि मुझे अपना खेत कुछ साल के लिये उधार दे दीजिये, मैं उसमें खेती करूंगा और खेती करके कमाई करूंगा, वह अतिश्रेष्ठ व्यक्ति बहुत दयालु थे। उन्होंने उस निर्धन व्यक्ति को अपना खेत दे दिया और साथ में पाँच किसान भी सहायता के रूप में खेती करने को दिये और कहा कि इन पाँच किसानों को साथ में लेकर खेती करो, खेती करने में आसानी होगी, इससे तुम और अच्छी फसल की खेती करके कमाई कर पाओगे। वो निर्धन आदमी ये देख के बहुत खुश हुआ कि उसको उधार में खेत भी मिल गया और साथ में पाँच सहायक किसान भी मिल गये। लेकिन वो आदमी अपनी इस खुशी में बहुत खो गया, और वह पाँच किसान अपनी मर्ज़ी से खेती करने लगे और वह निर्धन आदमी अपनी खुशी में डूबा रहा, और जब फसल काटने का समय आया तो देखा कि फसल बहुत ही खराब हुई थी, उन पाँच किसानों ने खेत का उपयोग अच्छे से नहीं किया था, ना ही अच्छे बीज डाले थे जिससे फसल अच्छी हो सके।

जब वह अतिश्रेष्ठ दयालु व्यक्ति ने अपना खेत वापस मांगा तो वह निर्धन व्यक्ति रोता हुआ बोला कि मैं बर्बाद हो गया, मैं अपनी खुशी में डूबा रहा और इन पाँच किसानों को नियंत्रण में न रख सका, ना ही इनसे अच्छी खेती करवा सका। अब यहाँ ध्यान दीजियेगा - वह अतिश्रेष्ठ दयालु व्यक्ति हैं - ``भगवान''। निर्धन व्यक्ति हैं - ``हम''। खेत है- ``हमारा शरीर''। पाँच किसान हैं हमारी इन्द्रियाँ - ``आँख, कान, नाक, जीभ और मन''। प्रभु ने हमें यह शरीर रूपी खेत अच्छी फसल(कर्म) करने को दिया है और हमें इन पाँच किसानों को अर्थात् इन्द्रियों को अपने नियंत्रण में रख कर कर्म करने चाहिये, जिससे जब वो दयालु प्रभु जब ये शरीर वापस मांग कर हिसाब करें तो हमें रोना न पड़े।

परानुभूति ही मानवता

एक पोस्टमैन ने एक घर के दरवाज़े पर दस्तक देते हुए कहा, ``चिट्ठी ले लीजिये''।

अंदर से एक बालिका की आवाज़ आई,``आ रही हूँ''। लेकिन तीन-चार मिनट तक कोई न आया तो पोस्टमैन ने फिर कहा, ``अरे भाई! मकान में कोई है क्या,अपनी चिट्ठी ले लो''। लड़की की फिर आवाज़ आई,``पोस्टमैन साहब,दरवाज़े के नीचे से चिट्ठी अंदर डाल दीजिए, मैं आ रही हूँ। ``पोस्टमैन ने कहा,``नहीं,मैं खड़ा हूँ,रजिस्टर्ड चिट्ठी है,पावती पर तुम्हारे साईन चाहिये''।

करीबन छह-सात मिनट बाद दरवाज़ा खुला। पोस्टमैन इस देरी के लिए झल्लाया हुआ तो था ही और उस पर चिल्लाने वाला था लेकिन, दरवाज़ा खुलते ही वह चौंक गया। एक अपाहिज कन्या जिसके पांव नहीं थे, सामने खड़ी थी।

पोस्टमैन चुपचाप पत्र देकर और उसके साईन लेकर चला गया। हफ़्ते,दो हफ़्ते में जब कभी उस लड़की के लिए डाक आती,पोस्टमैन एक आवाज़ देता और जब तक वह कन्या न आती तब तक खड़ा रहता। एक दिन लड़की ने पोस्टमैन को नंगे पाँव देखा।

दीपावली नज़दीक आ रही थी। उसने सोचा पोस्टमैन को क्या ईनाम दूँ।

एक दिन जब पोस्टमैन डाक देकर चला गया, तब उस लड़की ने जहाँ मिट्टी में पोस्टमैन के पाँव के निशान बने थे, उ पर काग़ज रख कर उन पाँवों का चित्र उतार लिया। अगले दिन उसने अपने यहाँ काम करने वाली बाई से उस नाप के जूते मंगवा लिये। दीपावली आई और उसके अगले दिन पोस्टमैन ने गली के सब लोगों से तो ईनाम माँगा और सोचा कि अब इस बिटिया से क्या ईनाम लेना? पर गली में आया हूँ तो उससे मिल ही लूँ। उसने दरवाज़ा खटखटाया।

अंदर से आवाज़ आई, ``कौन?'' पोस्टमैन, उत्तर मिला। बालिका हाथ में एक गिफ्ट पैक लेकर आई और कहा,``अंकल, मेरी तरफ से दीपावली पर आपको यह भेंट है। ``पोस्टमैन ने कहा'', तुम तो मेरे लिए बेटी के समान हो, तुमसे मैं गिफ्ट कैसे लूँ?'' कन्या ने आग्रह किया कि मेरी इस गिफ्ट के लिए मना नहीं करें।

``ठीक है कहते हुए पोस्टमैन ने पैकेट ले लिया। बालिका ने कहा, ``अंकल इस पैकेट को घर ले जाकर खोलना। घर जाकर जब उसने पैकेट खोला तो विस्मित रह गया, क्योंकि उसमें एक जोड़ी जूते थे। उसकी आँखें भर आई। अगले दिन वह ऑफिस पहुंचा और पोस्टमास्टर से फरियाद की कि उसका तबादला फौरन कर दिया जाए। पोस्टमास्टर ने कारण पूछा, तो पोस्टमैन ने वे जूते टेबल पर रखते हुए सारी कहानी सुनाई और भीगी आँखों और रुंधे कंठ से कहा, ``आज के बाद मैं उस गली में नहीं जा सकूंगा। उस अपाहिज बच्ची ने मेरे नंगे पाँवों को तो जूते दे दिये पर मैं उसे पाँव कैसे दे पाऊंगा?''

संवेदनशीलता का यह श्रेष्ठ दृष्टांत है। संवेदनशीलता यानि, दूसरों के दुःख-दर्द को समझना, अनुभव करना और उसके दुःख-दर्द में भागीदारी करना, उसमें शरीक होना। यह ऐसा मानवीय गुण है जिसके बिना इंसान अधूरा है।

एक अटल सत्य...!!!

भगवान विष्णु गरुड़ पर बैठ कर कैलाश पर्वत पर गए। द्वार पर गरुड़ को छोड़कर खुद शिव से मिलने अंदर चले गए। तब कैलाश की अपूर्व प्राकृतिक शोभा को देखकर गरुड़ मंत्रमुग्ध थे कि तभी उनकी नज़र एक खूबसूरत छोटी-सी चिड़िया पर पड़ी। चिड़िया कुछ इतनी सुंदर थी कि गरुड़ के सारे विचार उसकी तरफ आकर्षित होने लगे।

उसी समय कैलाश पर यम देव पधारे और अंदर जाने से पहले उन्होंने उस छोटे से पक्षी को आश्चर्य की दृष्टि से देखा। गरुड़ समझ गए कि उस चिड़िया का अंत निकट है और यमदेव कैलाश से निकलते ही उसे अपने साथ यमलोक ले जाएंगे।

गरुड़ को दया आ गई। वे इतनी छोटी और सुंदर चिड़िया को मरता हुआ नहीं देख सकते थे। उसे अपने पंजों में दबाया और कैलाश से हज़ारों कोस दूर एक जंगल में एक चट्टान के ऊपर छोड़ दिया, और खुद वापस कैलाश पर आ गये।

आखिर जब यम बाहर आए तो गरुड़ ने पूछ ही लिया कि उन्होंने उस चिड़िया को इतनी आश्चर्य भरी नज़र से क्यों देखा था। यमदेव बोले ``गरुड़, जब मैंने उस चिड़िया को देखा तो मुझे ज्ञात हुआ कि वो चिड़िया कुछ ही पल बाद यहाँ से हज़ारों कोस दूर एक नाग द्वारा खा ली जाएगी। मैं सोच रहा था कि इतनी जल्दी यह चिड़िया इतनी दूर कैसे जाएगी, पर अब जब वो यहाँ नहीं है तो निश्चित ही वो मर चुकी होगी।''

गरुड़ समझ गये ``मृत्यु टाले नहीं टलती चाहे कितनी भी चतुराई की जाए''।

इसके लिए भगवान कहते हैं।

करता तू वह है, जो तू चाहता है
परन्तु होता वह है, जो मैं चाहता हूँ
इसलिए कर तू वह, जो मैं चाहता हूँ
फिर देख होगा वो, जो तू चाहेगा।

जयपुर-वैशाली नगर। सेवाकेन्द्र के 18वें वार्षिकोत्सव पर केक काटते हुए सरकारी बिज़नेसमैन वेद प्रकाश, पूर्व अल्पसंख्यक आयोग अध्यक्ष जसवीर सिंह, बिज़नेसमैन कमल परासर, ब्र.कु. सुषमा, दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. चन्द्रकला, ब्र.कु. लीला व कांग्रेसी नेता राजेश मिश्रा।

इन्दौर-कालानी नगर। भागवत कथा कार्यक्रम के दौरान पंडित तिवारी जी को ईश्वरीय निमंत्रण देते हुए ब्र.कु. सुजाता।

हाथरस। मौलाना इरफान उल्लाह खान,नजामी शाही इमाम जामा मस्जिद,आगरा को ईश्वरीय सौगात में खुदा का खत भेंट करते हुए ब्र.कु. भावना।

रामनगर-जम्मू कश्मीर। प्रो. डॉ. कुलदीप सिंह व एडवोकेट दीपक सिंह बलोरिया को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका व ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. निर्मल।

नांगल डैम-पंजाब। 'शिव अवतरण संदेश' यात्रा द्वारा आध्यात्मिक ज्ञान देने के पश्चात् नायब तहसीलदार साधू सिंह को ईश्वरीय पत्रिकाएं भेंट करते हुए ब्र.कु. पुष्पा, ब्र.कु. रीमा व ब्र.कु. सरला।

गाज़ियाबाद-कवि नगर। ज्ञानचर्चा के पश्चात् चित्र में बायें से संतोष यादव,कमिश्नर,उत्तर प्रदेश भवन, उनकी धर्मपत्नी सरिता यादव, ब्र.कु. सुनीता, ब्र.कु. राजेश बहन व ब्र.कु. वनीत।